डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
classmate
Date 14|05|20
Page

विषय - संस्कृत ; बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, चतुर्थपत्र

व्याकरण - नाटक (अभिज्ञानशाकुन्तल)

महर्षि कण्व का चरित्र चित्रण :-

महर्षि कण्व का चरित्र एक अनुकरणीय तथा आदर्श चरित्र है। उनका दूसरा नाम 'काश्यप' भी है। ये एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। इनकी चारित्रिक विशेषताओं को निम्नांकित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है-

आश्रम के कुलपति :-

महर्षि कण्व आश्रम के कुलपति एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। प्राचीन काल में 'कुलपति' उसे कहा जाता था जिसमें निम्न विशेषतायें होती थी-

मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात् ।
अध्यापयति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः ॥

महान् तपस्वी :-

वे अग्निहोत्री हैं। अपनी तपस्या के बल से वे कालत्रय = वर्तमान, भूत एवं भविष्य का ज्ञान रखते हैं। इसीलिए वे शकुन्तला पर आने वाली विपत्ति का ज्ञान करके उसके निवारणार्थ सोमतीर्थ जाते हैं। उन्हें आकाशवाणी से ज्ञात हो जाता है कि शकुन्तला ने दुष्यन्त से प्रणय-प्रसंग और गान्धर्व विवाह करके उसका गर्भधारण किया है। उनकी उपस्थिति में राक्षसादि यज्ञों में विघ्न नहीं कर सकते हैं। सम्पूर्ण तपोवन के प्राणी यहाँ तक कि अचेतन पदार्थ भी उनसे प्रभावित है।

Scanned with CamScanner

निःस्वार्थ वात्सल्य की सजीव मूर्ति :-

महर्षि कण्व वात्सल्य की सजीव मूर्ति हैं। वे परित्यक्ता शकुन्तला का अपनी पुत्री के समान पालन-पोषण करते हैं। वह उनकी पालीगई धर्म-पुत्री है। उसके प्रति उनका निःस्वार्थ अगाध स्नेह है। कवि कालिदास ने कण्व को सद्गृहस्थ एवं स्नेह-वत्सल पिता के रूप में चित्रित किया है। इसीलिए सखियाँ शकुन्तला से प्रथम अंक में कहती हैं कि यदि पिताजी आज यहाँ होते तो इस विशिष्ट अतिथि को अपने जीवन का सर्वस्व देकर कृतार्थ करते - 'यद्यत्रायं तातः सन्निहितो भवेत्। इमं जीवितसर्वस्वेनाप्यतिथिविशेषं कृतार्थं करिष्यति'। वे शकुन्तला के मन की इच्छाओं को एक वात्सल्यपूर्ण पिता की भाँति ही पूर्ण करते हैं। शकुन्तला जब अपने पिता से सानुनय कहती है कि आप मेरे लिए व्याकुल न हों, तो करुणार्द्र होकर गद्गद वाणी से वे कहने लगते हैं -

"शममेष्यति मम शोकः, कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः"॥

शकुन्तला के प्रति कण्व का सहज वात्सल्य अत्यन्त आकर्षक है।

लोक व्यवहार में निष्णात :-

महर्षि कण्व लोक व्यवहार में पूर्ण निष्णात हैं। उन्होंने स्वयं कहा भी है - "वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्" उनके द्वारा

दुष्यन्त को भेजा गया सन्देश वधू पक्ष की ओर से विनम्र प्रार्थना है तथा भारतीय समाज में वधूपक्ष की स्थिति का द्योतक है। इससे उनके भारतीय लोक व्यवहार की कुशलता का परिचय मिलता है-

"अस्मान्साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः।
त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्॥
सामान्यं प्रतिपत्ति पूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः"॥

राजा के लिए भेजा गया उनका सन्देश सरल, मार्मिक एवं सारगर्भित है।

मनोवैज्ञानिक :-

महर्षि कण्व मानव मनोविज्ञान के परम आचार्य हैं। शकुन्तला दुःखी है। वह एक अपरिचित स्थान में कैसे रहेगी? उसका जीवन क्या दूभर नहीं हो जायेगा? आदि बातें उसे व्यग्र बना रही हैं। अतः उसकी व्यग्रता को दूर करते हुए वे कहते हैं- "पतिगृह पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में मग्न हो जाने से तुम इस दुःख को भूल जाओगी।"

अन्त में यह कह सकते हैं कि महर्षि कण्व एक सद्गृहस्थ ऋषि हैं, जो संयमरूपी धनवाले, महान् तपस्वी एवं विवेकवान् हैं। वस्तुतः उनका जीवन गंगा के प्रवाह की भाँति पावन है। हिम की भाँति उज्ज्वल है, सागर की भाँति विस्तृत है। त्रिवेणी की तरह तरल एवं स्निग्ध है।

Scanned with CamScanner